बाबा मुक्तानन्द की समयातीत सिखावनियाँ

"तुम्हारे रोम-रोम में परमात्मा का प्रेम बसा होना चाहिए।"

~ बाबा मुक्तानन्द

बेन विलियम्स द्वारा लिखित व्याख्या

इस सिखावनी में बाबा मुक्तानन्द हमें प्रोत्साहित करते हैं कि हम दिव्य प्रेम के साथ पूरी तरह एक हो जाएँ; उसमें लेशमात्र भी कमी न रहे। भगवत्प्रेम के रस को चख लेने या उस प्रेम की झलक पा लेने भर से हमारा जीवन बदलकर, बेहतर बन सकता है। परम प्रेम का स्पर्श पाकर, अन्तर-हृदय खिल उठता है और जीवन बहुमूल्य है, यह बोध भी विकसित होता है। अद्वैत शैवमत के ऋषिगण हमें सिखाते हैं कि जिस सृष्टि में हम वास कर रहे हैं, वह कोई साधारण रचना नहीं है। समस्त लोक-लोकान्तर और समस्त प्राणी चिति से प्रसरित होने वाले जगमगाते चितिकण ही हैं, इसके परमानन्दमय सार के 'घनीभूत रूप हैं,' अर्थात् ये सब 'चिद्रस' के घनीभूत रूप हैं।[१] यह ज्ञान आध्यात्मिक साधना द्वारा प्रत्यक्ष अनुभूति बन जाता है और बाबा मुक्तानन्द जैसे परमानन्द में लीन विभूतियों के जीवन और वचनों से सीखने की ललक भी स्वतः ही जग जाती है। जैसे-जैसे हम इन सन्त-महात्माओं से परिचित होते जाते हैं, हमारे अन्दर प्रश्न सहज ही उभरते हैं। वे इसे कैसे कर पाए? उन्होंने भगवान को सर्वस्व कैसे अर्पित कर दिया? वे प्रेम के महासागर में कैसे विलीन हो गए? बाबा जी हमें बताते हैं : परमात्मा का प्रेम "तुम्हारे रोम-रोम में" बसा होना चाहिए।

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] प्रत्यभिज्ञाहृदयम्, सूत्र ४ की व्याख्या।